Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
April to June 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LIV (54), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

नाथद्वारा की हरित गणगौर: पुष्टि मार्गीय परंपरा, समाज-संस्कृति एवं कलात्मक वैभव

सुरभि जैन*

* स्वतंत्र शोधार्थी, नाथद्वारा (राज.) भारत

शोध सारांश – राजस्थान की लोक-संस्कृति में गणगौर का पर्व शिव (ईसर) और पार्वती (गौरी) के सात्विक दांपत्य, सौभाग्य और प्रकृति के पुनर्जागरण का प्रतीक है। सामान्यत: यह पर्व चैत्र शुक्ल तृतीया को संपन्न होता है, परंतु मेवाड़ अंचल के सुप्रसिद्ध वैष्णव तीर्थनाथ द्वारा में यह उत्सव अपनी अनूठी सांस्कृतिक एवं धार्मिक विशिष्टता के कारण संपूर्ण भारत में अद्वितीय स्थान रखता है। नाथद्वारा में गणगौर किसी एक दिन का पर्व न होकर 'पंचरंगी गणगौर' के रूप में पांच दिनों तक अत्यंत हर्षोल्लास केसाथ मनाया जाता है। इन पांच दिनों में से चैत्र शुक्ल सप्तमी को मनाई जाने वाली 'हरित गणगौर' (हरा गणगौर)अपने दिव्य स्वरूप, पुष्टि मार्गीय सेवा-भावना, ऋतु-परिवर्तन के नैसर्गिक संदर्भ और समाज-संस्कृति के गहरे अंतर्संबंधों के लिए विशेष रूप से उल्लेखनीय है। प्रस्तुत शोध-पत्र नाथद्वारा की हरित गणगौर के ऐतिहासिक संदर्भों, पुष्टि मार्गीय दर्शन (शुद्धाद्वैत), सेवा-प्रणाली, वस्त्राभूषण एवं चित्रकला शैली, तथा इसके सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव का विषद विश्लेषण करता है।

शब्द कुंजी – पुष्टि मार्ग, श्रीनाथजी हवेली, पंचरंगी गणगौर, पिछवाई चित्रकला, शुद्धाद्वैत दर्शन।

प्रस्तावना – राजस्थान की पावन धरा अपनी समृद्ध परंपराओं, लोक-उत्सवों और भक्ति-रस के लिए जगद्विख्यात है। यहाँ की सांस्कृतिक धरोहर में 'गणगौर' का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। 'गण' शब्द भगवान शिव का और 'गौर' अथवा 'गौरी' शब्द माता पार्वती का द्योतक है। सामान्य लोक-परंपरा में यह त्यौहार कन्याओं द्वारा श्रेष्ठ वर की प्राप्ति तथा विवाहित स्त्रियों द्वारा पति की दीर्घायु और अखंड सौभाग्य के लिए मनाया जाता है।

परंतु जब हम नाथद्वारा की बात करते हैं, तो यहाँ लोक-परंपरा का संगम वल्लभ संप्रदाय (पुष्टि मार्ग) की अष्टछाप भक्ति धारा से हो जाता है। नाथद्वारा, जो भगवान श्रीनाथ जी (सप्तस्वरूपी श्रीकृष्ण) की प्रधान पीठ है, में प्रत्येक लोक-उत्सव को बालकृष्ण अथवा निकुंजनायक श्रीकृष्ण की लीला भाव से जोड़कर देखा जाता है। यहाँ गणगौर का उत्सव 'केवल लोक' न रहकर 'पुष्टि-सेवा' का अभिन्न अंग बन जाता है। नाथद्वारा में चैत्र शुक्ल तृतीया से चैत्र शुक्ल सप्तमी तक पाँच दिवसीय 'पंचरंगी गणगौर' (गुलाबी, केसरिया, हरा, पीला और लाल/सफेद) का आयोजन होता है। इनमें से 'हरित गणगौर' (हरा गणगौर)प्रकृति के पल्लवन, बसंत के समापन, ग्रीष्म के आगमन और निकुंज-लीला के नव-श्रृंगार का सर्वोत्कृष्ट प्रतीक है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं नाथद्वारा का सांस्कृतिक संदर्भ – नाथद्वारा की संस्कृति का केंद्र बिंदुश्रीनाथजी का मंदिर (जिसे 'हवेली' कहा जाता है) है। सन 1672 (विक्रम संवत 1728) में जब श्रीनाथजी का स्वरूप ब्रजमंडल के गिरिराज गोवर्धन से मेवाड़ की पावन भूमि (सिहाड़ गाँव, वर्तमान नाथद्वारा) में पधारे, तब मेवाड़ के तत्कालीन महाराणा राजसिंह प्रथम ने उनका अभूतपूर्व स्वागत किया और संप्रदाय की सुरक्षा का वचन दिया।

श्रीनाथजी के आगमन के साथ ही ब्रज की परिष्कृत उत्सव-परंपरा और मेवाड़ की शौर्यवान लोक-संस्कृति का एक अद्भुत सम्मिश्रण हुआ। पुष्टि मार्ग के प्रवर्तक जगद्गुरु श्रीमद्वल्लभाचार्य जी तथा उनके सुपुत्र गोस्वामी विट्ठलनाथ जी (गुसाईं जी) द्वारा स्थापित 'अष्टयाम सेवा' और 'वर्षोत्सव' प्रणाली में गणगौर को विशेष स्थान दिया गया।

नाथद्वारा में पंचरंगी गणगौर की शुरुआत के पीछे एक ऐतिहासिक और भावुक संदर्भ जुड़ा है। कहा जाता है कि मेवाड़ के राजघराने में गणगौर पूजन का विशेष महत्व था। जब नाथद्वारा में तिलकायत महाराज की देखरेख में गणगौर का उत्सव प्रारंभ हुआ, तो इसे केवल एक दिन का न रखकर पाँच दिनों तक अलग-अलग रंगों के श्रृंगार और भाव के साथ मनाने की परंपरा विकसित की गई। इनमें से हरा रंग (हरित गणगौर) प्रकृति की हरियाली, शीतलता और श्रीकृष्ण के स्वामिनी जी (राधा जी) के साथ निकुंज-विहार का प्रतीक माना गया।

पुष्टि मार्गीय दर्शन और हरित गणगौर का तात्विक अर्थ – पुष्टि मार्ग का मूल दर्शन 'शुद्धाद्वैत' है, जिसमें ईश्वर को सगुण, साकार और प्रेम-गम्य माना गया है। यहाँ 'पुष्टि' का अर्थ है: भगवान का अनुग्रह (कृपा)।पुष्टि मार्गीय सेवा-पद्धति में ईश्वर को किसी सुदूर अलौकिक सत्ता के रूप में नहीं, बल्कि घर के प्रिय बालक या निकुंज के नायक के रूप में पूजा जाता है। इस दर्शन में 'राग, भोग और श्रृंगार' का अत्यधिक महत्व है।

हरित रंग का तात्विक महत्व

प्रकृति और हरियाली का प्रतीक: चैत्र मास का उत्तरार्ध वसंत ऋतु के गमन और ग्रीष्म के आगमन का संधिकाल होता है। इस समय वृक्षों में नए पत्तो (कूपल) आते हैं। हरित गणगौर इस प्राकृतिक परिवर्तन और नवजीवन का स्वागत करती है।

राधा-कृष्ण के निकुंज भाव का प्रतीक: पुष्टि मार्ग में हरा रंग 'वृंदावन की कुंजों' और 'राधा रानी' के प्रति प्रेम-भाव को दर्शाता है। हरा रंग मन को

शीतलता प्रदान करता है, जो आने वाली ग्रीष्म ऋतु की तपन को शांत करने का आध्यात्मिक प्रयास है।

सौभाग्य और समृद्धि:भारतीय परंपरा में हरा रंग अखंड सौभाग्य, उर्वरता और समृद्धि का सूचक है।

हरित गणगौर का उत्सव विधान एवं सेवा-प्रणाली- नाथद्वारा में चौत्र शुक्ल सप्तमी को आयोजित होने वाली हरित गणगौर की प्रक्रिया अत्यंत विशद, अनुशासित और भक्तिमय होती है। इस दिन हवेली के अंदर और बाहर (नगर में) दो भिन्न किंतु परस्पर जुड़े हुए स्तरों पर उत्सव मनाया जाता है।

नाथद्वारा की पंचरंगी गणगौर श्रृंखला: तृतीया: गुलाबी, चतुर्थी: केसरिया, पंचमी: चुनड़ी, सप्तमी: हरित।(प्रकृति व शीतलता)

मंदिर (हवेली) के भीतर की सेवा-प्रणाली

हवेली में श्रीनाथजी, नवनीतप्रिय जी तथा अन्य निधि स्वरूपों के समक्ष हरित गणगौर का विशेष श्रृंगार किया जाता है।

I. **श्रृंगार धरावन:** इस दिन श्रीनाथजी को हरे रंग की विशेष पोषाक (वस्त्र) धारण कराई जाती है। इसमें हरे मलमल, साटन या रेशम पर जरी और गोटे का बारीक काम होता है।

II. **आभूषण:** भगवान को पन्ने के आभूषण, हरे रंग के मीनाकारी के गहने और ताजे हरे पत्तों/पुष्पों की मालाएं (तुलसी जी, दूर्वा, मरवा, मोगरा) अर्पित की जाती हैं।

III. **भोग विधान:** ग्रीष्म की आहट को देखते हुए भोग में शीतल द्रव्यों की प्रधानता होती है। हरे चने (छोलिया), पुदीने का जल, खस और गुलाब के शरबत, तथा शीतलता प्रदान करने वाली सामग्रियां अरोगी (अर्पित की) जाती हैं।

IV. **संगीत (कीर्तन):** अष्टछाप कवियों (सूरदास, कुंभनदास, परमानंददास आदि) द्वारा रचित गणगौर और वसंत अंत के पदों का गायन होता है। शास्त्रीय संगीत के ध्रुपद, धमार और हवेली संगीत की शैलियों में 'आज खेलत गणगौर...' जैसे पदों की गूंज होती है।

नगर सवारी (सवारी निकालने की परंपरा)- मंदिर में दर्शन के उपरांत सायंकाल के समय नाथद्वारा के 'रिसाला चौक' और मुख्य मार्गों से गणगौर की भव्य सवारी निकाली जाती है।

ईसर-गौर के स्वरूप: लकड़ी (काष्ठ) से निर्मित अत्यंत सुंदर और कलात्मक ईसर (शिव) और गौर (पार्वती) की मूर्तियों को हरे रंग के सर्वोत्कृष्ट वस्त्रों और पन्ने के आभूषणों से सजाया जाता है।

तिलकायत महाराज और बाल-ग्वाल: वल्लभकुल के गोस्वामी जन एवं मंदिर के सेवादार पारंपरिक पोशाक (केशरिया/सफेद अंगरखा, धोती, और हरे रंग की पाग) धारण कर सवारी की अगवानी करते हैं।

लवाजमा: सवारी में शाही लवाजमा (हाथी, घोड़े, ढोल, नगाड़े, चंवर, और छत्र) शामिल होता है। लोक नर्तक और शहनाई वादक सवारी के आगे-आगे चलते हैं।

नाथद्वारा चित्रकला शैली और हरित गणगौर- नाथद्वारा अपनी विश्व प्रसिद्ध 'पिछवाई' चित्रकलाऔर लघुचित्रों के लिए जाना जाता है। हरित गणगौर ने यहाँ की स्थानीय चित्रकला और हस्तशिल्प को गहराई से प्रभावित किया है।

पिछवाई कला में रूपांतरण- पिछवाई, जो श्रीनाथजी के स्वरूप के पीछे टंगे जाने वाले सूती या रेशमी कपड़े पर बने चित्र होते हैं, में हरित गणगौर का अंकन बहुतायत से मिलता है।

रंग संयोजन: हरित गणगौर की पिछवाइयों में गहरे हरे, सुनहरे और सफेद रंगों का विशेष प्रयोग किया जाता है।

विषय वस्तु: चित्रकार सघन कदंब के वृक्षों, कमलों से भरे सरोवरों, और हरे रंग के वस्त्रों में सजी गौर माता तथा श्रीनाथजी के दिव्य स्वरूपों को उकेरते हैं।

काष्ठ कला एवं वस्त्राभूषण हस्तशिल्प- नाथद्वारा के 'चित्रकारों की गली' और स्थानीय कारीगरों द्वारा गणगौर की प्रतिमाओं (काष्ठ की गँवर) का निर्माण पीढ़ी-दर-पीढ़ी किया जा रहा है। हरित गणगौर के लिए विशेष रूप से हाथ से बनी रेशमी पोशाकें, जिनमें 'पक्का गोटा', 'तारा आरी', और 'दबका' का काम होता है, तैयार की जाती हैं।

सामाजिक-सांस्कृतिक एवं आर्थिक आयाम - हरित गणगौर केवल एक धार्मिक या कलात्मक घटना नहीं है, बल्कि इसके व्यापक सामाजिक और आर्थिक प्रभाव भी हैं।

सामाजिक समरसता और स्त्री-विमर्श - राजस्थान के पारंपरिक समाज में गणगौर स्त्रियों का सबसे बड़ा उत्सव है। हरित गणगौर के दिन महिलाएं हरे रंग की लहरिया, चुनड़ी या साड़ी पहनती हैं और हाथों में मेहंदी लगाती हैं।

सामूहिक सहभागिता: इस दिन जाति और वर्ग के भेदभाव से परे हटकर संपूर्ण नगर की महिलाएं एक साथ एकत्र होकर लोकगीत (जैसे-'गांगौर ए पूजन द्यो जी गणगौर...') गाती हैं।

प्रकृति से तादात्म्य: हरित गणगौर का पर्व महिलाओं को प्रकृति संरक्षण और पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बनाने का एक सांस्कृतिक माध्यम भी है।

स्थानीय अर्थव्यवस्था और पर्यटन

हस्तशिल्प उद्योग: हरित गणगौर के अवसर पर नाथद्वारा की पिछवाई कला, मीनाकारी गहने, चांदी के आभूषण और पारंपरिक वस्त्रों के बाजार में भारी उछाल आता है।

धार्मिक पर्यटन: देश-विदेश से हजारों वैष्णव जन और पर्यटक इस अनूठी 'पंचरंगी गणगौर' और विशेष रूप से 'हरित गणगौर' की झांकी देखने नाथद्वारा पहुंचते हैं, जिससे स्थानीय होटल, परिवहन और व्यापारिक गतिविधियों को प्रोत्साहन मिलता है।

राजस्थान की अन्य गणगौर परंपराओं से तुलना - राजस्थान के अन्य भागों (जैसे जयपुर, उदयपुर, जोधपुर) में मनाई जाने वाली गणगौर और नाथद्वारा की हरित गणगौर में स्पष्ट अंतर देखा जा सकता है:

मानदंड	सामान्य/अन्य राजस्थानी गणगौर	नाथद्वारा की हरित गणगौर
मूल भाव	शिव-पार्वती का पौराणिक लोक-दांपत्य	पुष्टि मार्गीय बालकृष्ण/निकुंज लीला भाव
अवधि	मुख्यत: चौत्र शुक्ल तृतीया (1-2 दिन की सवारी)	5 दिवसीय 'पंचरंगी' उत्सव का भाग (सप्तमी को हरित)
मुख्य केंद्र	राजप्रासाद/नगर चौक	श्रीनाथजी की हवेली और रिसाला चौक
संगीत	शुद्ध राजस्थानी लोकगीत और ढोल	हवेली संगीत (ध्रुपद/धमार) एवं लोकगीत का संगम
प्रधान रंग	लाल, पीला, केसरिया	पूर्णत:हरा (वस्त्र, आभूषण, सजावट)

वर्तमान चुनौतियाँ एवं संरक्षण की आवश्यकता– आधुनिकता और वैश्वीकरण के दौर में हरित गणगौर जैसी अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के समक्ष कुछ चुनौतियाँ भी उपस्थित हुई हैं:

पारंपरिक संगीत का ह्रास: हवेली संगीत के प्रामाणिक गायकों और कीर्तनकारों की नई पीढ़ी में कमी आना।

हस्तशिल्प का मशीनीकरण: हाथ से बनी प्रामाणिक पिछवाइयों और प्राकृतिक रंगों के स्थान पर डिजिटल प्रिंट्स और रासायनिक रंगों का बढ़ता प्रभाव।

पर्यावरणीय बदलाव: प्राकृतिक फूलों और दुर्लभ जड़ी–बूटियों की उपलब्धता में कमी, जिससे पारंपरिक श्रृंगार सामग्री में बदलाव आया है।

संरक्षण के उपाय: वल्लभ संप्रदाय के संस्थानों और राज्य सरकार के पर्यटन विभाग द्वारा संयुक्त रूप से इस परंपरा के संरक्षण हेतु विशेष अभिलेखीकरण किया जाना चाहिए।युवाओं को हवेली संगीत और नाथद्वारा चित्रकला शैली में प्रशिक्षित करने हेतु अकादमियों की स्थापना आवश्यक है।

निष्कर्ष – नाथद्वारा की हरित गणगौरभारतीय संस्कृति की उस महान परंपरा का जीवंत उदाहरण है, जहाँ भक्ति, कला, लोक–संस्कृति और प्रकृति एक बिंदु पर आकर मिल जाते हैं। यह उत्सव केवल ईश्वरीय आराधना भर नहीं है, बल्कि यह मनुष्य का प्रकृति के प्रति आभार, वसंत के विदाई की मधुर स्मृति और आने वाली ऋतु के स्वागत का एक अद्भुत उत्सव है। पुष्टि मार्ग के श्राग, भोग और श्रृंगारश के माध्यम से हरित गणगौर जीवन में रंगों, शीतलता और आध्यात्मिक आनंद का संचार करती है। नाथद्वारा की यह अद्वितीय धरोहर न केवल मेवाड़ की, बल्कि संपूर्ण भारत की सांस्कृतिक चेतना का एक अनमोल रतन है, जिसका संरक्षण और संवर्धन हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

1. दीनदयाल गुप्ता, वल्लभ संप्रदाय का इतिहास और साहित्य, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।
2. जी.एन.शर्मा,मेवाड़ एंड द मुगल एम्परर्स, शिवलाल अग्रवाल एंड कंपनी, आगरा।
3. अमिया कांतिया,द गॉड्स ऑफ नाथद्वारारू पीचवाइस फ्रॉम राजस्थान, नक्श पब्लिशिंग।
4. रामकुमार वर्मा, राजस्थान की लोक कलाएं एवं उत्सव, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर।
5. केदारनाथ जोशी,नाथद्वारा का सांस्कृतिक इतिहास, श्रीनाथजी मंदिर मंडल प्रकाशन, नाथद्वारा।
6. अष्टछाप साहित्य एवं हवेली संगीत संकलन,श्री तिलकायत महाराज कार्यालय, नाथद्वारा।

****